राजभवन में आयोजित पथ–प्रदर्शक कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय का उद्‌बोधन

(दिनांक 04 सितम्बर, 2024)

जय हिन्द!

राजभवन में आयोजित 'पथ–प्रदर्शक' कार्यक्रम में आप सभी के बीच आकार मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आज स्कॉलरशिप प्राप्त करने वाले सभी स्टूडेंट्स को मेरी ओर से बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

मेरा मानना है कि किसी भी स्टूडेंट्स की आर्थिक स्थिति उसके आगे बढ़ने के लक्ष्य में बाधा नहीं बननी चाहिए। उत्तराखण्ड के ऐसे प्रतिभाशाली स्टूडेंट्स जो आर्थिक रूप से कमजोर हों, उनको किस प्रकार प्रोत्साहित किया जा सकता है? मैंने इस विषय पर गहन चिंतन–मनन और काफी सोच–विचार किया। मुझे प्रसन्नता है कि आज से लगभग ढाई साल पहले हमने जो संकल्प लिया था वह कार्य निर्बाध रूप से फलित हो रहा है।

इस कार्यक्रम में हाई स्कूल एवं इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा–2023 के टॉपर 4 छात्रों, विभिन्न संस्थानों में अध्ययनरत मेधावी एवं आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को छात्रवृति प्रदान की गई है।

साथ ही प्रदेश में संचालित नेताजी सुभाष चंद्र बोस आवासीय छात्रावासों एवं अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटरमीडिएट कॉलेज नैनीसैण (चमोली) को अनुदान प्रदान किया गया है। इसके अलावा उत्तराखण्ड रेडक्रास सोसाइटी, आसरा ट्रस्ट, लर्निंग ट्री स्कूल फॉर स्पेशल चिल्ड्रन एवं अपना घर संस्था को अनुदान वितरित किया गया। आज अनेक संस्थाओं को, और अनेक छात्र–छात्राओं को राजभवन की ओर से जो आर्थिक सहायता है, जो प्रोत्साहन है ये आपके सपनों को साकार करने में सहायक हो, ऐसी कामना है।

मुझे मालूम है आप में से अधिकांश ने अपने जीवन में संघर्षों को, अपने माता–पिता के संघर्षों को निकटता से देखा है। जिस प्रकार आग में तप कर सोने में निखार आता है ठीक उसी प्रकार इन संघर्षों के जरिए आप अपने जीवन को और अधिक सवारनें का प्रयास करें।

तेजी से बदल रही इस दुनिया में, हम अपने समाज, संस्कृति अपने मूल्यों से अलग न हों यह भी ध्यान रखना है। मानवता, प्रेम, भाईचारा और सेवा का मूल मंत्र हमें भूलना नहीं है। आप जब उच्च शिक्षा प्राप्त करके सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ना शुरू करें तो अपने किसी गरीब, वंचित साथी को पीछे मत छोड़िए बल्कि उसकी सहायता करने का प्रयास भी अवश्य करें।

जब मैं आपको देखता हूँ तो मुझे अत्यंत गर्व होता है। आप भारत की युवा ऊर्जा और शौर्य के प्रतीक हैं। आप भारत के विश्व गुरु बनने के सफर के पथ–प्रदर्शक हैं। इसीलिए इस कार्यक्रम का नाम 'पथ–प्रदर्शक' रखा गया है। यह कार्यक्रम भारत के युवा पथ–प्रदर्शकों 'टॉर्च बेयरर्स' का सम्मान है, उनकी हौसला आफजाई है।

किसी भी राष्ट्र की रीढ़ वहाँ की युवा शक्ति होती है। जो उसके भविष्य को बदल सकती है। युवाओं के विचारों की हवा ही राष्ट्र की विजय पताका की दिशा निर्धारित करती है। युवावस्था ही साधना की सच्ची अवस्था है जिस अवस्था में युवा वर्ग शक्ति का संचय करता है।

युवकों के पास चुनौतियों से जूझने का असीम बल होता है। इनकी संवेदनशीलता निश्छल, निर्मल होती है, जो स्वार्थों से परे होती है और मानव कल्याण को समर्पित होती है। युवक प्रगति, परिवर्तन एवं क्रांति के दूत होते हैं।

युवाओं के मन में उत्साह, साहस, प्रफुल्लता–काल्पनिकता और आदर्शवादिता का डेरा होता है। वे बहुत कुछ कर गुजरना चाहते हैं। यदि उनकी शक्ति को उचित दिशा–निर्देश मिल गया तो वे समाज को नई शक्ति देने की क्षमता रखते हैं।

हमारा इतिहास साक्षी है कि युवकों ने कई बार गुरुत्तर भार संभालें हैं और समाज को नई गति दी है। एक युवा कृष्ण ने ही जनता के कष्टों के निवारण के लिए अत्याचारी कंस का वध किया था, कृष्ण के पूर्व भी त्रेता युग में युवक राम ने राक्षसों के अत्याचारों से त्रस्त आर्यों की रक्षा की तथा दुराचारी रावण का वध किया। राजसी ऐश्वर्य का परित्याग कर भारत एवं विश्व को निर्वाण का संदेश देने वाले बुद्ध युवा ही थे। ऐसे ही महावीर, ध्रुव, प्रहलाद, लव, कुश, भगत सिंह, खुदीराम बोस, चन्द्रशेखर आजाद, आदि भी युवा ही थे। इन युवाओं के लिए समाज और देश सर्वोपरि थे।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। और सच्ची शिक्षा के दो प्रमुख लक्ष्य होते हैं एक तो व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। दूसरा चरित्र निर्माण करना। अच्छे सिद्धान्तों एवं अच्छे मूल्यों के बिना शिक्षा आपको बुद्धिमान और चालाक तो बनाती है लेकिन अच्छा नागरिक नहीं बनाती। मैं मानता हूँ शिक्षा के साथ–साथ जीवन मूल्यों का होना बेहद जरूरी है।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा ऐसी हो जो हमें प्राचीन आदर्शों से जोड़े और आधुनिक तौर–तरीकों को भी साथ लेकर चले। आज अगर हमें फिर से भारत को विश्व गुरु बनाना है, तो अपनी संस्कृति, अपने मूल्यों से जुड़ना होगा। हमें अपने राष्ट्र की ज्ञान–विज्ञान की महान

पंरपरा पर न सिर्फ गर्व करना होगा बल्कि उसका प्रचार–प्रसार भी करना है।
आप सभी देवभूमि उत्तराखण्ड के युवा हैं। इस पवित्र भूमि ने सदियों से भारत वर्ष और विश्व को ज्ञान एवं संस्कृति की गंगा का अमृत जल दिया है। आप हिमालय की गोद में पले बढ़े हैं। जिसने पूरे विश्व को धैर्य, साहस और शक्ति का संदेश दिया है। उत्तराखण्ड का होने के कारण आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। आप देश–विदेश में कहीं भी रहेंगे लोग आपको सम्मान एवं प्रेम से देखेंगे।

कोई भी राष्ट्र अपनी आकांक्षाएं एवं सपने युवा–वर्ग के सामर्थ्य तथा उत्साहपूर्ण योगदान से पूर्ण एवं साकार कर सकता है। आज, राष्ट्र को, एक सशक्त राष्ट्र के रूप में निर्माण करने के प्रति वचनबद्ध होने का समय आ गया है और ऐसा केवल युवा–वर्ग की भागीदारी से ही किया जा सकता है।

आज हम आजादी के अमृत काल में गुजर रहे हैं । अमृत काल के आने वाले इन 23 वर्षों में हमने अपनी शक्ति और सामर्थ्य को केंद्रित भी करना है। तभी वर्ष 2047 तक हमारा, एक शक्तिशाली और विकसित राष्ट्र का सपना साकार होगा।

आत्मनिर्भर भारत, विकसित भारत, आत्मनिर्भर भारत के सपनों को साकार करने का आह्वान के साथ ही मैं इस

अवसर पर यहां उपस्थित आप सभी महानुभावों को हार्दिक बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिन्द!